5459

हनुमान धारा

(खण्ड काव्य)

प्रो. योगेश चन्द्र दुबे

हनुमान धारा

प्रो. योगेश चन्द्र दुबे
कुलपति
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उ.प्र.)

निर्मल पब्लिकेशन्स
शाहदरा, दिल्ली

ISBN : 978-81-86400-194-x

© : लेखक

प्रकाशक :

निर्मल पब्लिकेशन्स्
ए-139, गली नं. 3,
कबीर नगर, दिल्ली-110094
मोबाइल : 0-9350295129

प्रथम संस्करण : 2012

द्वितीय संस्करण : 2016

मूल्य : 100 रुपए

शब्दांकन :
अंकुर कम्प्यूटर्स
दिल्ली-110053

मुद्रक :
शिवानी आर्ट प्रैस, शाहदरा, दिल्ली-110032

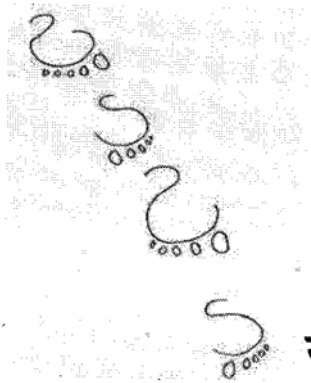

समर्पण

सख्त राहों में
आसान सफर लगता है।
ये तो मेरे दादा जी की
दुवाओं का असर लगता है।

जिनकी अप्रत्यक्ष कारणसत्ता मेरे जीवन का मार्गदर्शन है,
उन दादाजी स्व. परमसुख दुबे जी को यह
श्रद्धासुमन समर्पित

5

Prof. Rajendra Mishra
M.A. D.Phil. (Alld.) D. Litt. (Shimla)
Ex. Vive-Chancellor
Sampurnanand Sanskrit University
Varansi-221002 (U.P. INDIA)

Grams : "SHRUTAM"
Phones :
Office : (0542) 2204089
: (0542) 2204213
Resi. : (0542) 2206617

नान्दीवाक्

भारतीय-संस्कृति में, प्रारम्भ से ही देव तथा मर्त्य के बीच अनुग्राह्काऽनुग्राह्य सम्बन्ध मान्य रहा है। विश्वेदेवासूक्त के मंत्रों में इस सम्बन्ध का पुष्ट प्रमाण भी मिलता है। ऋषि कहता है हे देवों! जीने के लिए हमारे पास मात्र सौ वर्ष हैं। इन्हीं सौ वर्षों में हमारी काया का वृद्ध भी होना है। हमारे पुत्रों को भी (अपने पुत्रों का) पिता बनना है। अतएव प्रार्थना है कि इस शतायुष्य को बीच में ही विच्छिन्न मत कर देना

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चका जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

ऋग्वेद की ये ऋचाएँ ही, अवान्तर काल में पृथक् प्रतिष्ठापित स्तोत्रकाव्य का बीज बनीं। इन्हीं स्तुतियों से विकास हुआ भावी भक्तिपरक सप्तकों, अष्टकों, पञ्चदशियों, शतकों, पञ्चशतियों, सप्तशतियों तथा सहस्रकों का। संस्कृत वाङ्मय में गंगाष्टक भी है और वेदान्तदेशिक-प्रणीत पादुकासहस्रम् भी।

स्तुति, स्तोत्र, स्तवन, स्तव आदि शब्द देवता के प्रति समर्पणभाव के प्रतीक हैं। थका-हारा मनुष्य जब अपने संकटनिवारणार्थ देवशक्ति को गुहारता है तो स्तुति का जन्म होता है। ये स्तुतियाँ हृदय की गहराइयों से निकली वे संवेदनाएँ हैं जो करुणा से ओतप्रोत होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपनो अभीष्ट देवशक्ति का ही भरोसा होता है। अपने उपास्य के आधार पर ही उपासक शाक्त, शैव, वैष्णव, बौद्ध अथवा जैन होता है। आगमों में इन गूढ़ विषयों की विधि सम्मत व्याख्या की गई है।

परन्तु भारतीय जनमानस में कुछ देवशक्तियों को प्रत्यक्ष मानकर

6

प्रतिष्ठित किया गया है। यूँ तो सूर्य, अग्नि, जल, वायु, आकाश तथा पृथ्वी भी प्रत्यक्ष देवता ही हैं। तथापि हम इन्हें पञ्च महाभूत मानकर, इनकी देवोचित उपासना नहीं करते। परन्तु आञ्जनेय हनुमान् तथा भगवती भागीरथी इसके अपवाद हैं। ये दोनों प्रत्यक्ष देवता मात्र हैं, पञ्चमहाभूत के अंग नहीं। अतः इन दोनों की उपासना हम त्रिदेवोपासना के स्तर पर ही करते हैं।

हनुमदुपासना की विश्वसनीयता तथा प्रामाणिकता तो शंका-सन्देह से परे है। उसमें रामायणादि आर्षग्रन्थ प्रमाण हैं। रामायण में स्वयं मर्यादापुरुषोत्तम राम आञ्जनेय को कलि में धराधाम पर ही बने रहने का आदेश देते हैं। देवी वैदेही भी उन्हें आशीः देती हैं अजर अमर गुननिधि सुत होहू।

प्रिय डॉ. योगश दुबे की 'हनुमान धारा' में जनभाषा हिन्दी में अभिव्यक्त हनुमद्भक्ति का एक ऐसा सलोना, मनभावन रूप मिलेगा मानो वे संवेदनाएँ उनकी नहीं, आपकी हैं। आप ही अञ्जनानन्दन से कुछ निवेदित कर रहे हैं। स्तुति की विशिष्टता भी यही है कि वह कवि की नहीं, अपनी आर्ति प्रतीति हो। मैं चिरञ्जीवी योगेश को समरसता की इस ऊँचाई तक पहुँचने के लिए हार्दिक आशीर्वाद देता हूँ। सस्नेह

अभिराज राजेन्द्र मिश्र

भावभूमि

भगवान श्रीसीतारामजी के अनन्य भक्त संकटमोचन हनुमान जी के श्री चरणों में बाल्यावस्था से ही भक्ति एवं अनुरक्ति का प्रस्फुटन पारिवारिक संस्कारों के कारण हो गया था। पुनश्च जैसे-जैसे उम्र के सोपान पर आगे बढ़ते गये वैसे-वैसे जागतिक समस्यायें भी बढ़ती गयीं तथा इन समस्याओं, संकटों के निवारणार्थ हनुमान जी की पूजा-आराधना एवं भक्ति में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। हनुमान जी के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति की पृष्ठभूमि में जो एक अहं भूमिका कार्य करती चली आ रही थी वह मेरे दादा जी स्व. परम सुख दुबे जी का हनुमान जी के प्रति सम्पूर्ण समर्पित जीवन। जिन्होंने हनुमान जी की पूजा-आराधना एवं भक्ति के अतिरिक्त जीवन में कुछ भी नहीं किया। आज भी जैसे उनकी अप्रत्यक्ष सत्ता मुझे हनुमान जी की आराधना के लिए प्रेरित करती रहती है।

हनुमद्भक्ति से प्रारंभ कर हनुमानधारा खण्डकाव्य की रचना तक पहुँचने में कई प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष घटनाओं का अविस्मरणीय योगदान है। आज जब हनुमानधारा खण्डकाव्य का प्रकाशन होने जा रहा है। इस मंगलकारी बेला में एक हृदयस्पर्शी रोचक कथानक के उद्घाटन का लोभसंवरण नहीं कर पा रहा हूँ जो हनुमान धारा एवं चित्रकूट के प्रति लगाव एवं आस्था से संबंधित है। पूज्य पिताजी पं. श्री वंशराज दुबे जी अत्यन्त सात्विक, सरल एवं आध्यात्मिक प्रकृति के धनी व्यक्तित्व हैं तथा यावज्जीवन अध्यापन वृत्ति से जुड़े रहे। पिताजी अपने कॉलेज के दो-एक सहयोगी अध्यापकों के साथ 1975 से लगातार प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर पर चित्रकूट जाया करते थे। वहाँ कामतानाथ पर दीपक जलाकर, चित्रकूट के सम्पूर्ण दर्शनीय स्थलों का दर्शन कर तीन दिनों बाद जब वापस घर पहुँचते तो मेरी माताजी श्रीमती सावित्री देवी तथा बाद में

8

चलकर मेरी श्रीमती डॉ. इन्दुमती भी उनका चरण थाल में धोकर चरणोदक लेते और वह जल सम्पूर्ण घर में छिड़का भी जाता। पिताजी, प्रायः प्रातःकाल ही घर पहुँचते थे। हल्की हल्की ठंड पड़ती थी। कौड़ा जलाकर पिताजी को सुखासन पर बैठाया जाता तथा धीरे-धीरे उनका पाँव धोया जाता, पोंछा जाता तथा आग के सामने सेंकाई होती रहती और इसी समय पिताजी चित्रकूट के सम्पूर्ण स्थलों कामदगिरि, जानकीकुण्ड, रामघाट, हनुमान धारा, स्फटिकशिला, भरतकूप, सती अनुसूइया, गुप्त गोदावरी एवं मन्दाकिनी आदि का क्रमशः मनोहारी एवं सजीव वर्णन करते न अघाते। वहाँ उपस्थित हम सभी लोग अत्यन्त चाव से उनकी सम्पूर्ण बातें सुनते तथा बीच-बीच में कौतूहल वशात् कुछ-न-कुछ चित्रकूट के विषय में पूछते तथा पिताजी बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उसे बताने में कोई कोर कसर न उठाते। वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं आध्यात्मिक आस्था का दिव्य सजीव वर्णन करते-करते पिताजी निहाल हो जाते। आज भी उन क्षणों को स्मरण कर मन चित्रकूट के प्रति आस्था के उस सागर में गोते लगाने लगता है।

सन् 1991 में लगभग दीपावली के अवसर पर जब पिताजी चित्रकूट गये तो वहाँ कहीं ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना से संबंधित कोई बैठक चल रही थी। पिताजी थोड़ी देर उस बैठक में सम्मिलित हुए तथा चलते समय मन में प्रभु कामतानाथजी से यह प्रार्थना किए कि हे प्रभु! यदि यह विश्वविद्यालय यहाँ खुल रहा है तो मेरे बेटे को इस विश्वविद्यालय में नियुक्ति दिला दें जिससे मैं प्रतिवर्ष यहीं आकर आपकी शरण में निवास करूँ तथा भजन-पूजन कर सकूँ। इस घटना के कुछ समय बाद ही विश्वविद्यालय में विज्ञापन निकला तो मैंने पिताजी को बताया। पिताजी ने बड़े अधिकारपूर्वक कहा इसमें आवेदन करो तुम्हारा अवश्य हो जाएगा। ऐसा ही हुआ मेरा चयन तो हुआ किन्तु किन्हीं कारणों से वह चयन रद्द हो गया। फिर भी मैं निराश नहीं हुआ।

पिताजी की आस्था, आसक्ति एवं लगाव के साथ-साथ मेरी भी रामकथा पर डी.फिल्. करने तथा हुनमान जी की भक्ति में संलग्न रहने

फिर क्या था हनुमान अञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रोमहाबलः का पाठ करते हुए उनका गुणगान करते-करते अचानक अवधी भाषा में उसका छायानुवाद प्रस्फुटित हो गया। मैं आश्चर्य में था कि मुझसे तो कविता करते नहीं बनती यह कैसे बन रहा है। वस्तुतः उस क्षण मेरी मनोदशा महर्षि वाल्मीकि के प्रथम श्लोक प्रस्फुटन जैसी थी। शीघ्र ही मैंने उसे लिख लिया तथा लिखने के बाद उसे बार-बार पढ़ रहा था कि यह मैंने ही लिखा है? वस्तुतः उस समय यह संकटमोचन हनुमान जी की मेरे ऊपर साक्षात् कृपा थी जो **श्रावणमास, शुक्ल पक्ष, सोमवार दिनांक 05.07.1993 को अपनी बोली भाषा अवधी में कविता की धार फूट पड़ी** आनंदरामायण के श्लोक हनुमानअञ्जनी सूनुर्वायुपुत्रो महाबलः के छायानुवाद के साथ

अंजना के पूत और वायु के सपूत तूँ ही।
हनुमान महाबली राम के भी प्यारे हो।
अर्जुन के मित्र और भूरे-भूरे नेत्र वाले।
अमित प्रताप वाले उदधि के पारे हो।। 1 ।।
सीता शोक दूर कियो, लखन को प्राण दियो।
दर्प रावण चूर कियो, बारह नाम वाले हो।
सोवत जागत पढ़े, गुनत कहीं भी चले।
दूर सब भय करे, राउरे सहारे जो।। 2 ।।
रण में विजय करें, राजद्वारे भय हरें।
जंगल के बीहड़ में, भय बाधा टारे हो।
दुहाई हनुमान की, बड़ाई सीताराम की।
जो छन्द की रचाई में, **'योगेश'** को उभारे हो।। 3 ।।

यहीं से प्रसुप्त कवित्व बीज एवं संस्कार विशेष उद्बुद्ध होकर प्रथमतः **'हनुमानधारा'** नामक खण्डकाव्य की रचना करता है। पुनश्च, इसी हनुमद्कृपा के फलस्वरूप चित्रकूट में सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ। फिर क्या था? चित्रकूट आगमन के बाद तो जैसे मेरी कविता को धार तथा छन्दों को तार मिल गया और भगवान् श्रीसीतारामजी के पद परसी

चित्रकूट की सोंधी लाल माटी से भी तार क्या जुड़ गया जैसे जीवन का सम्पूर्ण सार मिल गया।

'हनुमानधारा' की उपर्युक्त प्रथम रचना के बाद निरन्तर 5, 6, 7, 8, 9 जुलाई 1993 तथा क्रमशः आगे की तिथियों में भी हनुमान जी के प्रति समर्पित कोई न कोई छन्द रचना होती चली गई जिसे तिथिवार लिखता चला गया। हनुमान धारा के अन्तर्गत लिखे गये इन छन्दों में मेरी भावभूमि से उपजी तोतली बोली में अभिव्यक्त भावनाएँ हैं, हनुमान जी के प्रति भक्तिभाव की अविरल धाराएँ हैं, मेरे कवि भाव का प्रादुर्भाव है। यही कारण है कि उस समय जैसा कुछ हनुमानजी ने लिखवाया वैसा ही बिना किसी परिमार्जन के तिथिवार, क्रमवार मैं इसे प्रकाशित कराने का व्यामोह नहीं छोड़ पा रहा हूँ। हनुमानधारा की रचना काल में मुझे कविता रचने या काव्यकौशल का कोई भी ज्ञान नहीं था इसीलिए तो प्रारंभ में ही मैंने हनुमान जी के श्रीचरणों में निवेदन करते हुए कहा है कि

भाव, भाषा, छन्द क त नहीं कवनऊँ ज्ञान हो।
हनुमान कइसे करी तोहरई बखान हो।
ज्ञान के निधान तनी देइ देत तूँ ज्ञान हो।
जनम हमार बनि जातइ भगवान हो।।

इसी प्रकार की भावना माँ सरस्वती से भी करता हूँ कि माँ! हनुमान जी के जीवन चरित से संबंधित जो काव्य की भावधारा आपने बहा दी है उसे तू और हनुमानजी दोनों मिलकर पार लगा दो

भाव नाहीं मोरे बाटइ, भाषा कमजोरइ बाटइ,
छन्दक विधान अउ सधान नाहीं माई रे।
धार हनुमान क महान जवनई फूटि चली,
मिलि हनुमान, तूँही पार दे लगाई रे।।
जब भाव क धार बहाई दिहू,
तब धार क पार लगाव तूँ माई।

मझधार में तूँ पतवार धर,
अब धार किनारे लगाव तूँ माई।।

'हनुमान धारा' की रचना के समय शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से हताशा, निराशा एवं दिशाहीनता की परिस्थिति निर्मित थी। हनुमान जी के प्रति समर्पित इस रचना ने ही जीवन की इन सम्पूर्ण निषेधात्मक परिस्थितियों से उबारा। आर्तमन हनुमान जी से अपनी इस दैन्यावस्था का वर्णन अत्यन्त आर्तभाव से करने में कोई संकोच नहीं किया

रोजी पे बवाल हउअइ, रोटी क अकाल हउअइ,
ठौर क मोहाल हउअइ, अंजना के लाल जी।
धन क अकाल हउअइ, जन के मलाल हउअइ,
एतनइ सवाल हउअइ, अंजना के लाल जी।।

यहाँ स्पष्ट करना अत्यावश्यक है कि 'हनुमान धारा' कहने मात्र से यह न समझा जाय कि इस लघुकाव्य के अन्तर्गत चित्रकूट में स्थित 'हनुमान धारा' नामक स्थान के सन्दर्भ में लिखी गई कोई काव्यमय प्रस्तुति है अथवा चित्रकूट के हनुमानधारा में स्थित हनुमान जी के जीवनचरित से संबंधित कोई काव्य है। वस्तुतः 'हनुमान धारा' नामक इस लघुकाव्य खण्डकाव्य में हनुमान जी के जीवन चरित से संबंधित प्रमुख घटनाओं छायानुवाद, माई से अरज, हनुमज्जन्म, बालसमय रवि भक्ष लियो, लाल देह लाली लसे, हनुमन्नाम, अशोकवनविध्वंस एवं अंत में कुछ गीतों को सम्मिलित कर इस काव्य को 'हनुमान धारा' खण्डकाव्य का स्वरूप दिया गया है। चूँकि हनुमान जी के जीवनचरित से संबंधित, भक्तिभाव संवलित कुछ छन्द, मुक्तक एवं गीत अवधी, भोजपुरी में संग्रथित हैं, इसीलिए इसका नाम 'हनुमान धारा' है।

प्रकृत स्थल पर चित्रकूट में स्थित 'हनुमान धारा' के सन्दर्भ में कतिपय तथ्यों का उद्घाटन आवश्यक है। उल्लेखनीय है कि चित्रकूट के प्राचीन स्थलों कामदगिरि, रामघाट, जानकीकुण्ड सती अनसूया, भरतकूप,

12

स्फटिकशिला आदि कुछ प्रमुख स्थलों को छोड़कर अन्य स्थलों जैसे मन्तगयेन्द्र स्वामी, गुप्त गोदावरी एवं हनुमान धारा आदि का कोई शास्त्र सम्मत वर्णन नहीं प्राप्त होता है। इन स्थलों के सन्दर्भ में अनेक किंवदन्तियाँ या अन्तर्कथायें ही चित्रकूट में प्रचलित हैं। 'हनुमान धारा' के सन्दर्भ में जो दन्तकथा प्रचलित है उसी से सम्बद्ध मेरी एक आध्यात्मिक कल्पना है जो 'हनुमान धारा' स्थान के सन्दर्भ में सर्वाधिक समीचीन एवं उपयुक्त है राम-रावण युद्ध के बाद राम के राज्याभिषेक के समय सभी अंशावतार उपस्थित हुए। राज्याभिषेक के पश्चात् प्रभु राम ने सभी अंशावतारों से निवेदन किया कि वे सभी देवतांश जहाँ से भी आये हैं अपने-अपने अंशों में विलीन हो अपने स्थान पर चले जायें। विभीषण जी लंका पर राज्य करेंगे तथा हनुमान जी इस पृथ्वी पर तब तक रहेंगे जब तक यह पृथ्वी और इसी पृथ्वी पर मेरी कथा रहेगी। इसके पश्चात् दुर्वासा के शाप से लक्ष्मण के स्वर्गारोहण की घटना हुई। लक्ष्मण की मृत्यु के पश्चात् भगवान भी अत्यंत दुखी होकर अन्य भाइयों के साथ स्वर्गारोहण करते हैं।

भगवान राम के आदेश से हुनमान जी इसी पृथ्वी पर रहने की वचनबद्धता के आधार पर अयोध्या में ही निवास करते हैं किन्तु भगवान राम तथा सीताजी के न रहने के बाद वह अयोध्या हनुमान जी को काटने दौड़ने लगी। भगवान श्रीसीताराम जी के विरह तथा लंका दहन के समय शरीर में लगी आग की लपटों से संतप्त हनुमान जी आन्तरिक एवं बाह्य दोनों तापों से व्याकुल होकर आर्तभाव में भगवान की गुहार करते हैं। भगवान, भक्त हनुमान की पुकार सुनकर उपस्थित होते हैं। कष्ट एवं ताप से व्याकुल हनुमान भगवान जी से निवेदन करते हैं प्रभु! मेरे इस आन्तरिक एवं बाह्य ताप को दूर करने का मुझे कोई उपाय बताइए जिससे मैं आपके आदेश का पालन करते हुए इस पृथ्वी पर रह सकूँ। भक्त हनुमान के कष्ट को देखते हुए भगवान ने कहा "हनुमान! आप शीघ्र ही यहाँ से चित्रकूट चले जाइए। वहाँ देवांगना तीर्थ में एक अमृतोपम निर्झर जलधार बहती रहती है। आप उसी जलधार के नीचे जाकर बैठ जाएँ।

यह जलधारा आपके समस्त तापों को शीतल करके आपको सुखी एवं संतुष्ट रखेगी। कालान्तर में यह स्थान आपके नाम से प्रसिद्ध होकर 'हनुमान धारा' के रूप में विख्यात होगा। यहाँ पर आपको इस दर्शन से लोगों के दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापों का शमन होगा तथा लोगों की समस्त मनोकामनायें पूर्ण होंगी।" इतना कहते हुए भगवान श्रीराम अपने लोक में चले गये। भगवान के आदेश से हनुमान जी तब से चित्रकूट में 'हनुमान धारा' के नाम से जाने जाते हैं। इस संदर्भ से संबंधित एक गीत इस 'हनुमान धारा' खण्ड काव्य के अंत में वर्णित है इसलिए भी इस काव्य का 'हनुमान धारा' नाम समीचीन ही है। अंत में मैं इतना ही कहूँगा हनुमान जी की जय, हनुमान धारा की जय, चित्रकूट धाम की जय, भगवान श्रीसीताराम की जय।।

विनयावनत

प्रो. योगेशचन्द्र दुबे

15

अनुक्रम

1. माई से अरज	17
2. ऊँ श्री हनुमते नमः	19
3. बारह नाम वाले हो	20
4. ऊँ पवन सुताय नमः	21
5. तोहरइ सरनियाँ	22
6. लाल देह लाली लसै	23
7. षोडश हनुमन्नाम	25
8. हनुमज्जन्म	27
9. बाल समय रबि भक्ष लियो	30
10. अशोक वन विध्वंस	32
11. जय हनुमान हरे	36
12. नइया कै खेवैया	37
13. बाबा पवन कुमार	38
14. लइना बाबा क दरसनवॉ	40
15. बजरंगी अवतार तुम्हारी जय-जय हो	41
16. हे लइना बाबा मेरे सरकार...	42
17. बजरंगबली हे प्रभू...	44
16. हनुमान धारा	46

माई से अरज

(ऊँ ऐं सरस्वत्यै नमः)

गोर-गोर कमल अउ गोर-गोर चन्द्रमा स,
गोर-गोर रुपवइ तोहार मोरि माई बा।
गोर रुप गोर रंग गोर ही वसन अंग,
गोर ओस बूनी स तउ हार मोरि माई बा।।1।।

गोरे-गोरे कमल के आसन विराज तूँही,
हाथे में सितार-तार तोरे मोरी माई बा
बरम्हा, महेश, विष्णु आदि सब देव सदा,
माथ तोरे चरन में नाए मोरी माई बा।।2।।

कमल क आसन छोड़ि, हंस पे सवार दौड़ि,
देखि लेतू दीन-हीन दशा मोरि माई बा।
काटि देतू कष्ट, नष्ट पाप सब कई देतू,
सुनि लेतू अरज उधार मोरि माई बा।।3।।

व्यास, बाल्मीकि, कालिदास तूँ बनइलू माई,
सूर, तुलसी, कबीर, जायसी जगइलू हो।
मोरे मन कविता क भाव तूँ उठइलू माई,
रचि **हनुमानधार** तोहँई बहइलू हो।।4।।

भाव नाहीं मोरे बाटइ, भाषा कमजोरै बाटइ,
छन्द का विधान अउ सधान नाहीं माई रे।

धार हनुमान क महान जवनइ फूटि चली,
मिलि हनुमान तूँहीं पार दे लगाई रे।।5।।

जब भाव का धार बहाइ दिहू,
तब धार क पार लगाव तूँ माई।
मझधार में तूँ पतवार धर,
अब धार किनारे लगाव तूँ माई।।6।।

5 घनाक्षरी सं. 1, 2 **या कुन्देन्दु तुषारहार धवला** का अक्षरशः अवधी में छायानुवाद तथा 3, 4, 5, 6 में **सा मां पातु सरस्वती भगवती निः शेष जाड्यापहा** का भावानुवाद है।

ऊँ श्री हनुमते नमः

हनुमानञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः।

रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः।।

उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।

लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा।

एवं द्वादशनामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः।

स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत्।।

तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्

राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन्।।

(आनन्दरामायण-08/13/8-11)

बारह नाम वाले हो

छायानुवाद

अन्जना के पूत और वायु के सपूत तूँही।
हनूमान महाबली, राम के भी प्यारे हो।
अर्जुन के मित्र और भूरे-भूरे नेत्र वाले,
अमित प्रताप वाले, उदधि को पारे हो।।1।।

सीता शोक दूर कियो, लखन को प्राण दियो,
दर्प रावण चूर कियो, बारह नाम वाले हो,
सोवत जागत पढ़े, गुनत कहीं भी चले,
दूर सब भय करे, राउरे सहारे जो।।2।।

रण में विजय करें, राजद्वारे भय हरें,
जंगल में बीहड़ में, भय-बाधा टारे हो।
दुहाई हनुमान की, बड़ाई सीताराम की,
जो छंद की रचाई में, **योगेश** को उभारे हो।।3।।

ॐ पवन सुताय नमः

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,

दनुजनवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,

रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

(श्रीरामचरितमानस 5/श्लोक सं.-3)

छायानुवाद

बल है अपार जैसे बल के निधान हो,
देह है विशाल जैसे स्वर्ण के ऊँचान हो।
दनुज समूह बदे सोझवँइ कृशानु हो,
ज्ञानियों में प्रमुख तूँही तो ज्ञानवान हो।।1।।

गुन के समूह क त, तोहँई खजान हो,
वानर समूह क त, तूँही परधान हो।
रामजी के प्यारे और भगत महान हो,
वायु के सपूत को **योगेश** का प्रणाम हो।।2।।

भाव-भाषा-छन्द क त, नाहीं कवनउ ज्ञान हो,
हनुमान कइसे करी, तोहरई बखान हो।
ज्ञान के निधान तनी देइ देतऽ तूँ ज्ञान हो,
जनम हमार बनि जातइ भगवान हो।।3।।

तोहरइ सरनियाँ
(हनुमत् पाहि माम् सदा)

बल बाटइ तोहरे, अउ बुद्धि बाटइ तोहरे,
हाँ विद्या बाटिन तोहरे, त लेई केकर नाउँ हो।
गुन बाटइ तोहरे, अगुन बाटइ हमरे,
त जनम सुधारइ बदे, जाई कवने ठाउँ हो।।1।।
देह बाटइ तोहरे, अउ स्नेह बाटइ तोहरे,
त काहें नाहीं, हमके, लगाइ लेत बाऊँ हो।
गदा बाटइ तोहरे, त बदा बाटइ हमरे,
कि तोहरइ सरनियाँ, में जिनगी क छाऊँ हो।।2।।

लाल देह लाली लसै

मुख लाल-लाल हउअइ, ऊँच लाल भाल हउइह,
दसन कराल हउहइ, अंजना के लाल की।
होंठ लाल-लाल हउअइ, रसनाग्र लाल हउअइ,
दाढ़ विकराल हउहइ, अंजना के लाल की।। 1 ।।
कान लाल-लाल हउहइ, अँखियउ त लाल हउहइ,
नाक भी विशाल हउहइ, अंजना के लाल की।
देह लाल-लाल हउहइ, पोंछियउ त लाल हउहइ,
बाँहभी विशाल हउहइ, अंजना के लाल की।। 2 ।।
वस्त्र लाल-लाल हउहइ, स्वर्णकान्ति बाल हउहइ,
देह भी विशाल हउहइ, अंजना के लाल की।
अंगराग लाल हउअइ, देहँ चन्दन लाल हउअइ,
गले पुष्पमाल हउअइ, अंजना के लाल की।। 3 ।।
रूप-रंग लाल हउअइ, देखि सब निहाल हउअइ,
मोहूँ पर कृपालु हउअइ, अंजना के लाल जी।
वायु-शिव क लाल हउअइ, केसरी क बाल हउअइ,
राम मन मृणाल हउअइ, अंजान के लाल जी।। 4 ।।
रावण क बवाल हउअइ, दनुजन क काल हउअइ,
लंका में मिशाल हउअइ, अंजना के लाल जी।
बल बेमिशाल हउअइ, बुद्धि भी कमाल हउअइ,
विद्या से निहाल हउअइ, अंजना के लाल जी।। 5 ।।

रोजी पे बवाल हउअइ, रोटी क अकाल हउअइ,
ठौर के मोहाल हउअइ, अंजना के लाल जी।
धन क अकाल हउअइ, जन के मलाल हउअइ,
एतनइ सवाल हउअइ, अंजना के लाल जी।। 6 ।।

षोडश हनुमन्नाम

श्रीराम क संकट दूर कियो,
तब **संकटमोचन** नाम तिहारो।
शोक अशोक कियो सिय की,
तब **शोक विमोचन** नाम तिहारो।।1।।
कष्ट सुग्रीव क नष्ट कियो,
तब **कष्टविमोचन** नाम तिहारो।
शूल हर्‌यो उर लक्ष्मण को,
तब **शूलविमोचन** नाम तिहारो।।2।।
युद्ध में रावन पछार दियो,
तब **युद्धविशारद** नाम तिहारो।
रावन यज्ञ विगारि दियो,
तब **बुद्धिविशारद** नाम तिहारो।।3।।
शत्रु पै मुष्टि प्रहार कियो,
तब **मुष्टिप्रहारक** नाम तिहारो।
सोने क लंका तू जारि दियो,
तब **शत्रुविदारक** नाम तिहारो।।4।।
अंजना माई के लाल भयो,
तब **अंजनालाल** है नाम तिहारो।
केशरी वंश प्रसिद्ध भयो,
तब **केसरीनन्दन** नाम तिहारो।।5।।
वायु ने शक्ति प्रदान कियो,
तब **पूतपवन** भयो नाम तिहारो।

शंकर शक्ति अधान कियो,
तब **शंकरसुवन** है नाम तिहारो।।6।।
इन्द्र के वज्र से टूटी हनू,
मिली शक्ति **हनुमान** नाम तिहारो।
देवन मिलि बज्र अंग कियो,
बजरंगी तबहि प्रभु नाम तिहारो।।7।।
वानर के तुम राज कियो,
तब **वानरराज** है नाम तिहारो।
श्रीराम क काज संवारि दियो,
तब **रामभगत** भयो नाम तिहारो।।8।।
हनुमान महान है नाम तेरो,
बजरंगी तुम्हें परनाम हमारो।
कवि भगत **योगेश** हर याम तेरो,
प्रभु भगत के काम है कान्ह तिहारो।।9।।

हनुमज्जन्म

प्रभु मोरे मनवाँ विचार उठल भारी बा।
तोहरई किरितिया लिखइ क बेकरारी बा।।
भाव नाहीं बनि पावै, भाषा नाहीं तनि पावइ।
नाहीं जानि परइ काउ छन्द कइ लचारी बा।।1।।
मनवा दहत बाटइ, तनवा तपत बाटइ,
तोहरइ में लीन होइ जायेक तैयारी बा।
पकड़ि कलमिया लिखाइ देत जउ नाथ,
बहि जातइ धार इहइ अरज हमारी बा।।2।।
मनवाँ जुड़ातें सब, कनवा सुहातें सब,
सुनिके किरितिया जवन सुखकारी बा।
शान्ति मिले हमहूँ के शान्ति मिलै सबहीं के,
रचले कीरितिया तोहार यश भारी बा ।।3।।
बात कही हाथ जोरि, सुनि ल सब कान खोलि,
एक बार शिवजी मगन रहिले ध्यान में।
ध्यान के मगनिया अउ तन कै लगनिया से,
जानि परइ जैसे बाटइ चेतना निशान में।।4।।
ताहिं कैलाश पे ब्रह्मादि देव आइ गइलें,
हाथ जोरि विनती करइ लागे मन में।
पुनि वेदमन्त्रन से विनती किहेन जोर,
शोर जैसे शब्दन क मचि ग गगन में।।5।।

शिवजी प्रसन्न भइलें, उठि चैतन्य भइलें,
पूँछले कारन कवने चल्य करतार हो?
दीन-हीन बरम्हा बोले, मन क रहस्य खोले,
भोले तनी सुनतऽ तूँ विनती हमार हो।।6।।
हरि क इरादा बाटइ, पक्का ओनकर वादा बाटइ,
लेइके जनमवाँ रावन के ऊ मरिहँइ।
तबउ मोर चिरौरी बाटइ मनवाँ मे भौरी बाटइ,
गौरीपति बिनु हरि लंका कइसे जरिहँइ।।7।।
एतनइ अरज मोर हमरउ गरज घोर,
चोर मनवाँ क कहइ तोहऊँ जनम ल।
हरि क सहायक बनि सेना क तूँ नायक बनि,
मारि सब दनुजन के, तबहीं तूँ कल लऽ।।8।।
ब्रह्मा कइ वचन सुनि मन मुसुकाए गुनि,
ताड़ि के उमा के पुनि बोले भोले दानी बाय।
मन में उछाह मोरे हरि सेवा चाह मोरे,
जन्म के अभाव मोरे साथे जब शिवानी बाय।।9।।
लेकिन आपन अंश देबइ दानवन क दंस देबइ,
वंश जातुधान क विध्वंस होये छन में।
गिरिजउ क अंश रहे, अंश मोरे अंश रहे,
दास रघुवर के मिले ई दूनौ तन में।।10।।
कइलें विदाई सबके, मरम बताइ सबके,
शिउ अउ शिवानी, हरि भजइ लागे मन में।
लेइके जनम बाटइ, हरि काज मन बाटइ,
कुलियइ तकतिया समेटे शिउ तन में।।11।।

शाप के पाप से यक्ष कोई, धरि वानररूप में केसरी भइलें,
शाप के पाप से ही अप्सरा, अंजना पतनी बनिके चलि अइलें।
प्रेम के पाश बन्हे दुनहूँ, स्वर्नगिरि के उँचान मकान बनउलें,
वानरराज भये केसरी मिलि अंजना संग में राज चलउलें।। 12।।
बितले बरिस बारह एहि विधि चैन से,
सुख संतोष दूनौ दीखै मन वैन से।
चाह अउ उछाह काहू दीखै नाहीं नैन से,
रैन-दिन काटि दिहें सुख अउर शैन से।। 13।।
मन जउ तपन रहा, शिउ क भजन रहा,
तन जउ लगन रहा, शिउ क मनन रहा।
तन-मन-धन तीनउँ शंभु के चरन रहा,
बाकी जवनइ रहा कुलि गिरिजा सरन रहा।। 14।।
वरखा क दिन रहल, मेघ चहुँ ओर बहल,
मोर-पपिहा क जिउ जुड़ाइ गइलें छन में।
जीउ सब जुड़ाइ गइलें, पेड़ लहलहाइ गइलें,
सुख का सुराज चारिउ ओर भयल वन में।। 15।।
पूरइ नउ मास रहल, हिय में हुलास रहल,
आस अंजना क पूर भइलें एक लाल के।
मंगल क दिन रहल, शुभ ग्रह सुदिन रहल,
अंजना जी पैदा कइलीं दनुजन के काल के।। 16।।
वायु खुशहाल भइलें, शिवजी निहाल भइलें,
केसरी के बाल भइलें, अंजना के लाल जी।
ब्रह्मा खुशहाल भइलें, हरि भी निहाल भइलें,
रावन के बवाल भइलें, अंजना के लाल जी।। 17।।

बाल समय रबि भक्ष लियो

भोरवॅइ उठि माई बना के चली,
फल-मूल अहार लियावइ खातिर।
उठिहॅइ ललना रोइहँइ-पीटिहँइ,
कछु चाहे ओन्हॅइ लुबधावइ खातिर।।1।।
भुखिया तनिकौ न सहँइ लरिका,
तुरतइ ओन्हॅइ चाहे खियावइ खातिर।
सोचतइ मैया बनवॉ में गयी,
मनवाँ अकुलाइ पियावइ खातिर।।2।।
यहिं बीच जगे हनुमान लला
किछु बाल कला दिखलावइ खातिर।
उठतइ भुखिया तन तेज लगी,
कछु सूझै न भूख मिटावइ खातिर।।3।।
मैया-मैया रटि रोवै लगें
मैया नहिं बाटीं चुपावइ खातिर।
चुहवा पेटवा में कुलाच भरै
कछु दीखै न आँच बुझावइ खातिर।।4।।
यहिं बीच अरुन कइ किरन छिटकी
रवि लाल दिखैं दिशि लाल भइल बा।
रवि लाल अहार निहारि के बाल
निहाल भये अउ बवाल भइल बा।।5।।

लाल-लाल फरवा लगल कवनउ पेड़वा में,
जवने क ऊँचान असमान से छुआत बाय।
भुखिया करेर लागल, माई के अबेर लागल,
सोचि, हनुमान असमान चढ़ि जात बाय।।6।।
सनन-सनन चलइ, हनन-हनन चलइ,
बदरा क हियरा चीरत चलि जात बाय।
मनन-मनन चलई, घनन-घनन चलइ,
देखि-देखि जियरा पवन क डेरात बाय।।7।।
पवन से तेज चलि मनवॉ के वेग चलि,
सुरुज के नियरे अकास में समात बाय।
अगिया के गोलवा समुझि लाल फरवा स,
लीलइँ हनुमान जइसे नाहीं कवनउ बात बाय।।8।।
देखि यह लीला सब देउता डेराइ गइलें,
धरती-अकास तीनउ लोक अन्हियार भ।
राहु घबरायल इन्द्रदेव क गोहार किहेसि,
बिना जाने बूझे हनु पर बज्र क प्रहार भ।।9।।
मूर्छित हनुमान लेइके वायुजी गुफा में घुसले,
बिना प्राणवायु तीनउ लोक वेकलाइ ग।
इन्द्र पछताइ लागें देउतन के संग भागे,
पहुँचि के गुफा के सम्मुख प्रायश्चित विधान भ।।10।।
इन्द्र जी क्षमा है मॉगे देउता सब पॉय लागे,
हमनी क भूल-चूक प्रभु सब सुधारि द।
बल-बुधि-ज्ञान के निधान हनुमान होइहॅइ,
जग कइ जिनिगिया प्राणवायु से सॅवारि द।।11।।

अशोक वन विध्वंस

रामजी की किरपा से, सिन्धु भा अपार पार,
दरस तुम्हार भयल, मातु! बजरंगी के।
धन्य हम मातु भइले, नाथ से सनाथ भइले,
कवन अदेश बोल! बाटइ रणरंगी के।।1।।
काटि डाली दनुज कि मारि डाली रावन,
कि जारि डाली लंका के महल नभचुंबी से।
भूख भी लगल बा तेज, क्रोध क बढ़ल बा वेग,
देखि रखवारे जे हयेन दस अंगी के।।2।।
बाटिका में फल बाटइ, खाइ लायक भल बाटइ,
भूख भी प्रबल बाटइ, मातु बजरंगी के।
माई तूँ अदेश देतू, मन न कलेश करतू,
त आज किछु करतब देखाइत एन्हन भंगी के।।3।।
मां क अनुशासन पाई, शक्ति दुगुनी बढ़ाई।
बज्र स कठोर अंग भयल बाटइ जंगी के।।
पस्त भइले रक्षक अउ त्रस्त भइले दैत्य सब।
देखि के विशाल बिकराल अड़बंगी के।।4।।
भागि गइले बाग से, अभागे किछु रखवारे,
मारि गइले आगे जो पड़े थे रणरंगी के।
हीलि गयल हाड़, रिपु आड़ सब खोजइ लागें,
सुनि के दहाड़ महाबीर बजरंगी के।।5।।

मीठ-मीठ फर खाये, बाकी तोरि के बहाए,
डारि-पात, फल-फूल जवनइ रहा वन में।
हाथे-लाते तोरे सब, गदा से मरोरे पेड़,
पोंछी में लपेटि के उठाइ लिहें छन में।।6।।
वाटिका में नाटिका जो हनुमान कइ डारेन्,
छन में बदलि ग अशोक शोकवन में।
बाग सब उजारि के, बोलाइ दिहे यातुधान
आउ आज देखी तोरे बल जवनइ तन में।।7।।
वाटिका उजारि डालेसि, रखवार मारि डालेसि,
नाथ एक वानर आयल बहु भारी बा।
रखवारे बरजइ लागें मारि खाइ सब भागे,
नाथ यहिं विपति में तोरइ बलिहारी बा।।8।।
सुनतइ त आग लागि, सेना चली बाग भागि।
देखी चली आज कवनउ वनरे क बारी बा।।
हा हा-हू हू करतई चलें, मारु-मारु कहतइ चलें।
जानि परइ जैसे जमराज क सवारी बा।।9।।
दनुजन के आवत देख, क्रोध क बढ़ल वेग,
हनुमान धइ-धइ, सबहीं के मारे बा।
हाथ-गोड़ सब तोरेन, मोहवउँ सबहि के फोरेन्,
मारि-मारि सबही के जियरा निकारे बा।।10।।
सेना सब मारि गयल, सुनतइ अछय चलल,
देखतइ त कपिराज पेड़वइ उपारे बा।
पेड़वा क लागल चोट, अक्षय क उड़ल होश,

मारि-मारि सबहीं के फिरि ललकारे बा।।11।।
अक्षय क क्षय भयल, सुनि रावन कोपि गयल,
मेघनाथ जा तूँ तोरे भाई के ऊ मारे बा।
मारि जिनि नाय ओके, बान्हि के तूँ लाय मोके,
देखी तनी वानर जे बेटवा के मारे बा।।12।।
भाइ जेकर मरल बाटइ, कोप ओकर बढ़ल बाटइ,
उहइ मेघनाथ आज वाटिका पधारे बा।
हनूमान पीसे दाँत, आव ता ई मेघनाथ,
गरजत दौड़ि फिरि पेड़वइ उखारे बा।।13।।
पेड़ क प्रहार, कपिराज क दहाड़ दूनौ,
मेघनाथ अउ ओकरे सेना के पछारे बा।
लात-मूका हाथ चलइ, अस्त्र गदा साथ लड़इ,
जनु गजराज दूइ एकहीं अखारे बा।।14।।
कपिनाथ मारि दिहलें, मेघनाथ गिरि गइलें,
छन माहीं अपने के होश में उबारे बा।
उठि पुनि कीन्हि माया, हनुमान के चेताया,
ब्रह्म अस्त्र साधि, हनुमान के पुकारे बा।।15।।
महिमा इ राम क हउ, ब्रह्म पाश राम क हउ,
देखि नागपाश, इहइ मन में विचारे बा।
तोरी जउ नागपाश, होइ मर्जादा नाश,
बन्हि जाबइ भल बा कि राम रखवारे बा।।16।।
धन्य-धन्य कपिनाथ, आज तूँ भय सनाथ,
नाथ काज बिनु हाथ पाश के सहारे बा।

धन्य-धन्य हनुमान, काम तूं कीह्य महान,
बुद्धि-बल तोरइ, राम-काज के सँवारे बा।।17।।
राम क काम कीहऽ हनुमान
त मोरउ काम तूं करब्य की नाहीं।
नैया हमार पड़ी मंझधार
तरैया बताव तूँ तरब्य की नाहीं।।18।।
कि मंजधार में डूबि मरब,
तूँ खेवैया बताब त डरब्य की नाहीं।
(मोरे) **योगेश** अनाथ के नाथ तूं हीं,
कपिनाथ बताब तूँ अइब्य की नाहीं? ।।19।।
राम के काज बदे हनुमान,
तूं नाग के पाश में ही चलि गइल।
दास के काज बदे हनुमान,
तूं प्रेम के पाश में ही बन्हि गइल।।20।।
राम क काज सँवारइ वदे,
हम जानत हूँ न गोहारि बोलउल।
मोर भी काज सँवारइ बदे,
कपिराज! ई लागत तूँ चलि अउल।।21।।
धृष्टता के माफ कीह, शिष्टता से काम लीह,
हे हो कपिराज! आज काज तूं सवारि द।
भूल-चूक माफ कीह, मूक सब सहि लीह,
नाथ यहिं अनाथ के भी पार तूँ उतारि द।।22।।

जय हनुमान हरे

(अष्टपदी हनुमद् वन्दना)

अन्जानसुत बजरंगी, रणरंगी हे,
करहु सदा कल्यान, जय हनुमान हरे।1।
मारुतसुत शिवनन्दन, जगवन्दन हे,
अरुण वदन अभिराम, जय हनुमान हरे।2।
जनकसुता दुःख भंजक, प्रभुरंजक हे,
संकटमोचन नाम, जय हनुमान हरे।3।
लक्ष्मण शूलनिवारक, भवतारक हे,
सतत भजत श्रीराम, जय हनुमान हरे।4।
बाल समय रवि भक्षक, जनरक्षक हे,
करहु अभय अविराम, जय हनुमान हरे।5।
दशमुख दरप विदारक, भयवारक हे,
जपत सदा हरि नाम, जय हनुमान हरे।6।
पारथ के रथ पालक, खल घालक हे,
प्रकटित् चरित ललाम, जय हनुमान हरे।7।
रामचरित गुन गायक, कपि नायक हे,
बलबुधि ज्ञान निधान, जय हनुमान हरे।8।
कवि 'योगेश' पुकारत, अति आरत हे,
बसहु सदा उर धाम, जय हनुमान हरे।9।

नइया कै खेवैया

हनुमान बाटइ मोर मॅजधारे नैया,
पार लगइद मोरी नैया के खेवैया।। टेक।।
बड़-बड़ काम कइल राम क तूँ भइया,
छोट एक काम मोरइ, तोहॅइ करैया,
हनुमान!..... ।।1।।
लखन के तूँ प्राण दिहल ऽ, प्रान के देवैया,
जिनगी हमार तोहरे हॉथे तूँ सहैया,
हनुमान!..... ।।2।।
सीय शोक दूर कइलऽ, शोक के हरैया,
दुःख मोर दूर कइदऽ, लंका के नशैया,
हनुमान!..... ।।3।।
विनती हमार सुनिलऽ, अज्जना के भैया,
नाहीं त गोहारि करबइ मइया क हे भइया,
हनुमान!..... ।।4।।
सुनि के गोहारि मैया, भेजिहीं बोलवैया,
डाटि जब अदेश करिहीं, होबऽ तब सहैया,
हनुमान!..... ।।5।।
कहल-सुनल भूलि सब, राख्य मोहें छइयॉ,
तोहॅइ छोड़ि हनुमत केकर पकड़ी हे बहियाँ
हनुमान!..... ।।6।।

बाबा पवन कुमार

शंकर सुवन, हे केशरीनन्दन, बाबा पवन कुमार
सरनिया तोहरे आए,
सुनि लेत विनती हमार-सरनिया तोहरे आए,
तोहरे आए, तोहरे आए, तोहरे आए द्वार
सरनिया तोहरे आए-सुनि लेत विनती हमार.....।
राजपाठ प्रिय-प्रिया हीन सुग्रीव से राम मिलाय,
बाली पापी के चंगुल से 'रुमा' प्रिया छोड़वाय,
तीनहु लोक में तोहरे जइसन, नाहीं केहु उदार,
सरनिया तोहरे आए-कइ देत किरपा अपार,
सरनिया तोहरे..... ।1 ।
सीताहरण से व्याकुल राम के मन धीरज बन्हवाय,
सौ योजन समुद्र तूँ लाँघ, सीता पता लगाय,
लंका जारि के दुष्टन क तूँ, कीह्य बहुत संहार
सरनिया तोहरे आए-तूँ ही मोरे, जीवन अधार,
सरनिया तोहरे..... ।2 ।
लखन लाल के शक्ती लागी तुरतइ बैद बोलाय,
भोर से पहिले बूटी लाइके ओनकर जान बचाय,
रामादल में होइ लगा हे, तोहरइ जय-जयकार
सरनिया तोहरे आए-बनइ देत बिगड़ी हमार,

सरनिया तोहरे..... ।3।

पारथ के रथ पे चढ़ि के तूँ पाण्डव के जितवाय
राम सिया के काज में आपन जिनगी पूरी लगाय
सबके कष्ट मिटावइ खातिर, भा तोहरइ अवतार
सरनिया तोहरे आए-बनइ देत जिनगी हमार,
सरनिया तोहरे..... ।4।

बल-बुद्धि औ ज्ञान बदे सब तोहरइ सरन में आवॅइ,
श्रीचरणन में ध्यान लगाइके भक्त सबहि कुछ पॉवॅइ,
पूजा-अर्चन किछु ना मोरे, छमा किह करतार,
सरनिया तोहरे आए-तबउ चाही तोहरइ दुलार,
सरनिया तोहरे..... ।5।

लइना बाबा क दरसनवॉ

चित्रकूट बनवॉ में बाबा जी क धमवॉ
मोर मनवॉ लागल बाय
लइना बाबा कइ दरसनवाँ करबइ
मनवाँ लागल बाय।।1।।

शिवरामपुरवइ में बाबा जी क नाम बाय
रामघाट सीतापुर के पजरइ में धाम बाय
जबहीं बोलइहीं बाबा करबइ तब पयनवाँ
मोर मनवाँ लागल बाय।। लइना बाबा .....।।2।।

एक-एक दिनवाँ बितल चलि जाला
नइखे बोलइहीं बाबा हमका बुझाला
काहें नाहीं डोलतानी तोहरइ असनवाँ
मोर मनवाँ लागल बाय। लइना बाबा .....।।3।।

होइ गयल हमरा से कवन कसूर हे
कइले बान बाबा काहें अँखिया से दूर हे
काहें ना बोलावतानी अपने शरनवाँ
मोर मनवाँ लागल बाय।। लइना बाबा .....।।4।।

रतिया के निदिया में देखले सपनवाँ
गइले बानी शायद हम बाबा के भवनवाँ
देखलें **'योगेश'** आज भरि-भरि नयनवाँ
मोर मनवाँ लागल बाय।। लइना बाबा .....।।5।।

बजरंगी अवतार! तुम्हारी जय-जय हो

लइना बाबा सरकार तुम्हारी जय-जय हो
बजरंगी अवतार तुम्हारी जय-जय हो
जय-जय हो, जय-जय हो, जय-जय हो, जय-जय हो,
जय-जय जय-जयकार तुम्हारी जय-जय हो। लइना बाबा...।।1।।

तेरे दरशन को आया चरणों में शीश झुकाया
तेरा बड़ा दरबार।। तुम्हारी जय-जय हो।। लइना बाबा..।।2।।

मन में है रूप समाया, तेरा गुणगान गाया,
ध्याऊँ मैं बारम्बार।। तुम्हारी जय-जय हो।। लइना बाबा..।।3।।

भक्तों ने तुम्हें मनाया, उनका हर काम बनाया
मेरा भी कर उद्धार।। तुम्हारी जय-जय हो।। लइना बाबा....।।4।।

कष्टों से हमें उबारो, सारी भवबाधा टारो
'योगेश' करता गुहार।। तुम्हारी जय-जय हो।।
बजरंगी अवतार, तुम्हारी जय-जय हो। लइना बाबा .....।।5।।

हे लइना बाबा मेरे सरकार....

हे लइना बाबा मेरे सरकार,
तू कर दे भव सागर से पार-2
तू हो बजरंगी के अवतार
तेरी जय-जय करता संसार,
हे लइना बाबा..... ।।1।।
तुझे हम शीश झुकाते हैं,
तेरे पर बलि-बलि जाते हैं-2
तेरा हम ध्यान लगाते हैं
तेरे गुन निशि-दिन गाते हैं।
दया के सागर पवन कुमार
दया कर मुझ पर भी इक बार,
हे लइना बाबा..... ।।2।।
नारियल भोग चढ़ाते हैं,
फूल-माला पहिनाते हैं-2
सिंदूर का लेप लगाते हैं
चलीसा तेरा गाते हैं।
पूजन षोडश विधि कर सिंगार
भजूँ मैं मंगल औ शनिवार,
हे लइना बाबा..... ।।3।।
धाम में जब भी जाते हैं,
तेरा हम दरसन पाते हैं-2

दरस से नहीं अघाते हैं
हृदय में तुम्हें बिठाते हैं।
मन में पैठो अंजनी कुमार
मेरा जीवन कर दो साकार,
हे लइना बाबा..... ।।4।।
तेरा सच्चा है ये दरबार
भक्त का भरता है भंडार-2
तुम्हारी महिमा अपरम्पार
गाता 'योगेश' है बारम्बार।
पा कर हे रुद्रा अवतार
आर्त 'योगेश' पुकारे द्वार,
हे लइना बाबा..... ।।5।।

बजरंगबली हे प्रभू....

लइना बाबा बाटइ मोरी मजधारे नइया,
पार लगइदऽ मोरी नइया के खेवइया-2
बजरंग बली हे प्रभू-2 जग के रखइया
पार लगइदऽ..... ।।1।।

दीन-हीन दुखी सब तोहरइ सहारे
दुखवा मिटावइ खातिर आवँइ सब दुआरे-2
दुख सब क दूर कइदऽ-2 लंका के नसइया
पार लगइदऽ..... ।।2।।

रोग-दोस-पीरा सब, तोहँईं त टारऽ
भूत-प्रेत बाधा से सब, तोहँईं उबारऽ
जिनगी हमार तोहरे-2 हाँथे तूँ सहइया
पार लगइदऽ..... ।।3।।

दुष्ट-बिरोधी-शत्रू तोहँईं सङहार
साधू संत भगतन क काज सब सँवारऽ
तोहरइ भरोसे सब-2 काज तू करइया
पार लगइदऽ..... ।।4।।

बल-बुधि-ज्ञान सब तोहँईं से आवइ
तन-धन-भवन सब तोहँईं से पावइ
सब कुछ 'योगेश' के प्रभु-2 तोहँईं देवइया
पार लगइदऽ..... ।।5।।

हनुमान धारा

देहियाँ कइ जरनि नाहीं, कवनिऊ विधि जात बाय।
कहाँ जाई प्रभू मोर जिया ना समात बाय।।
कहाँ जाई राम मोर, जिया ना समात बाय।।
सबके तूँ पठयऽ प्रभू, अपने ही धमवाँ-2
हम दिन-राति बैठि रटी तोहरइ नमवाँ-2
राम नाम तजि नाहीं किछुवउ बुझात बाय,
कहाँ जाई प्रभु मोरे ..... ।। 1 ।।

जब तक धरती मइया सीताराम नाम रहे-2
तब तक इहँवँइ प्रभू तोर हनुमान रहे-2
शीतल चरनिया छोड़ि के, जिया पछतात बाय,
कहाँ जाई प्रभु मोरे, ... ।। 2 ।।

तोहरे कारन प्रभू, भयल मोर जनमवाँ-2
तोहऊँ गिरिजाशंकर सभे जानइँ इ मरमवा-2
तोहरे बिना ई नाहीं अजोधिया सुहात बाय,
कहाँ जाई प्रभू मोरे, ... ।। 3 ।।

तोहरे चरनवाँ में नाहीं कवनिउ आँच रहा-2
मइया के शीतल छहँवाँ नाहीं कवनिउ ताप रहा-2
लंका दहन कइ देहियाँ अबउ अगियात बाय,
कहाँ जाई प्रभू मोरे, ... ।। 4 ।।

करुण पुकार कपि कै सुनतइ प्रभु आइ गये-2
देहियाँ क जरनि मिटे कइसे प्रभु बताइ गये-2
चित्रकूट तुरतइ चलि जा, इहइ मोहिं सुझात बाय
उहीं तोहरे देहियाँ क जरनि जुड़ात बाय।। 5 ।।
विपति क मारा सब चित्रकूट जइहँइ
चित्रकूट औषधि से दुःखवा मिटइहँइ
देवतन के अंगना में ओहिं शीतल जलधार बाय
उहीं तोहरे देहियाँ कइ अगिनि बुझात बाय।। 6 ।।

तनवाँ पे तोहरे निसिदिनि शीतल जलधार बहे
मनवा से तोहरे निसि दिनि नेह रस प्यार बहे
'हनुमान धारा' होये ई जनात बाय
उहीं सारे भक्तन कइ, कामना पुरात बाय।। 7 ।।

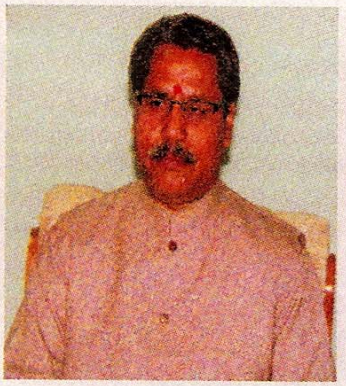

प्रो. योगेश चन्द्र दुबे

न्म : 1 मार्च, 1960, ग्राम–मैनसिल (गुलजारगंज) जौनपुर (उ.प्र.) के यशस्वी ाता-पिता–श्रीमती सावित्री देवी–पं. श्री वंशराज दुबे के आँगन में पल-बढ़कर बड़ा हुआ।

शिक्षा : एम. ए., डी. फिल्., डिप् (लिंग्विस्टिक्स), डी. लिट्. (मानद)

काशित ग्रंथ : (1) रामायणमंजरी का साहित्यिक अनुशीलन, (2) सूक्ति सुधा, (3) बीसवीं शती के प्रमुख संस्कृत महाकाव्यों में चित्रित भारतीय स्वाधीनता संग्राम, (4) ग्राम्य गीतांजलि–गीत काव्य) (5) हनुमानधारा (खण्डकाव्य), (6) रामकथामंदाकिनी (शोध-निबंध संग्रह), 7) ईशावास्योपनिषद् (सारस्वती टीका), (8) भाषाविज्ञान की रूपरेखा, (9) विकलांग दर्शन, 10) महाकवि स्वामी रामभद्राचार्य जी का संस्कृत वाङ्मय को अवदान।

ध्यापन : सन् 1987 से संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अध्यापन यात्रा प्रारंभ कर हात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.) में यशस्वी शिक्षक के रूप में ख्यात होकर जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ. प्र.) में 1 अगस्त 001 से संस्कृत आचार्य एवं विभागाध्यक्ष तथा कला संकाय के अधिष्ठाता के रूप में पदस्थ।

शासनिक अनुभव : कुलपति, प्रति कुलपति, कुलसचिव, अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, प्रभारी ाचार्य पुस्तकालय, मुख्य कुलानुशासक, छात्र कल्याण अधिष्ठाता एवं शोध निदेशक आदि विभिन्न शैक्षणिक एवं प्रशासनिक पदों पर कार्यानुभव।

रस्कार : अलंकरण : साहित्य कला शिरोमणि, साहित्य महोपाध्याय, अवध भारती भूषण, तुलसी ारती समलंकरण, कवि रत्न, सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान, राष्ट्रीय शिक्षा रत्न, पूर्वांचल विद्वद्-रत्न, क्षय गौरव सम्मान, साहित्य रत्नाकर, शताब्दी सम्मान, हेल्प यू अवार्ड, उ.प्र. रत्न सम्मान आदि।

म्प्रति : कुलपति, जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ.प्र.) पिन-210204

थायी निवास : 'सारस्वतम्' संत कबीर मार्ग, जानकीकुण्ड, चित्रकूट (उ.प्र.) पिन-210204

ोबाइल : 09452032221, 07509687119

-मेल : profyogeshdubey@gmail.com.